निमंत्रण

शतचण्डी महायज्ञ और योग पूर्णिमा महोत्सव २०१८

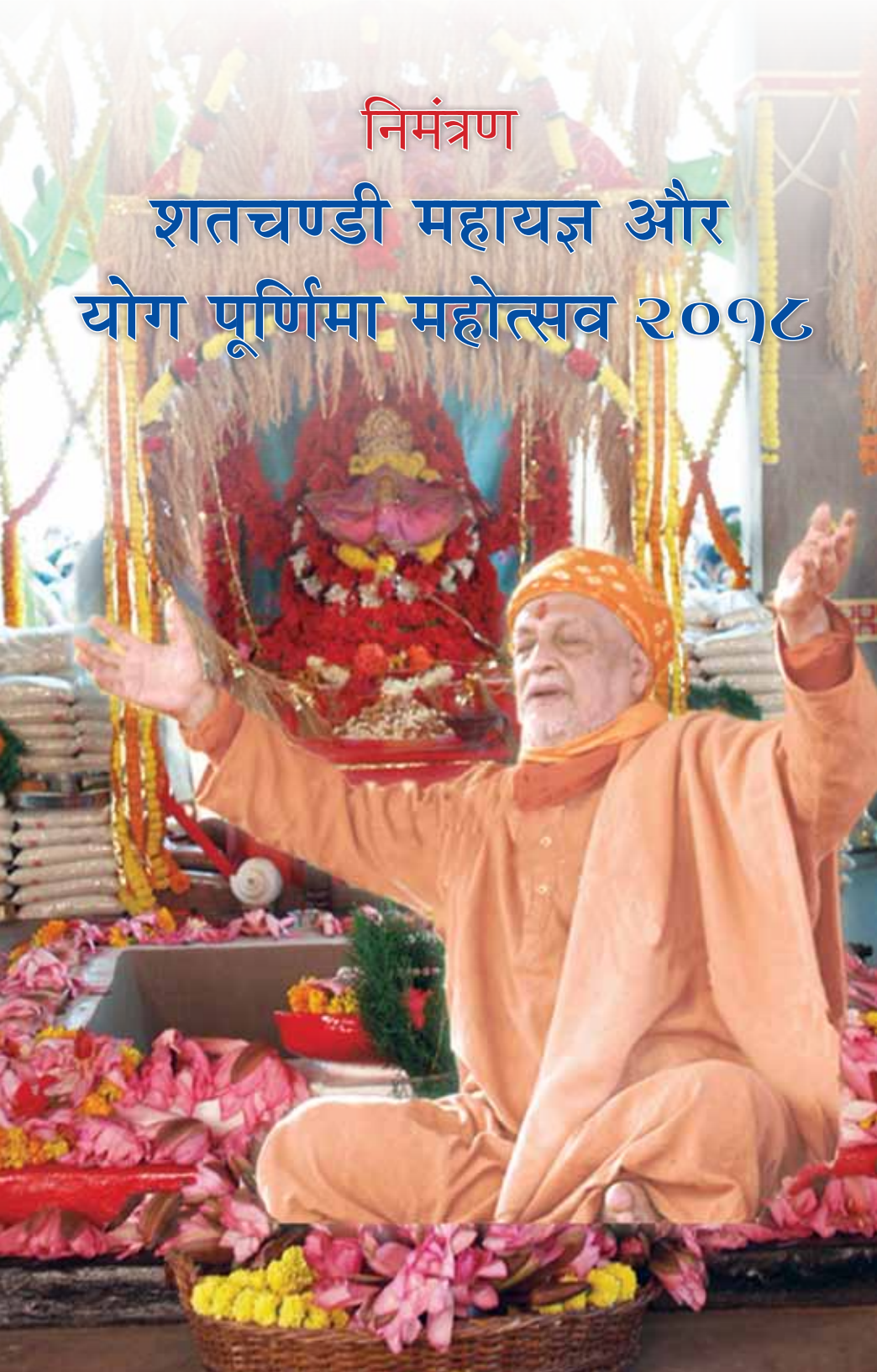

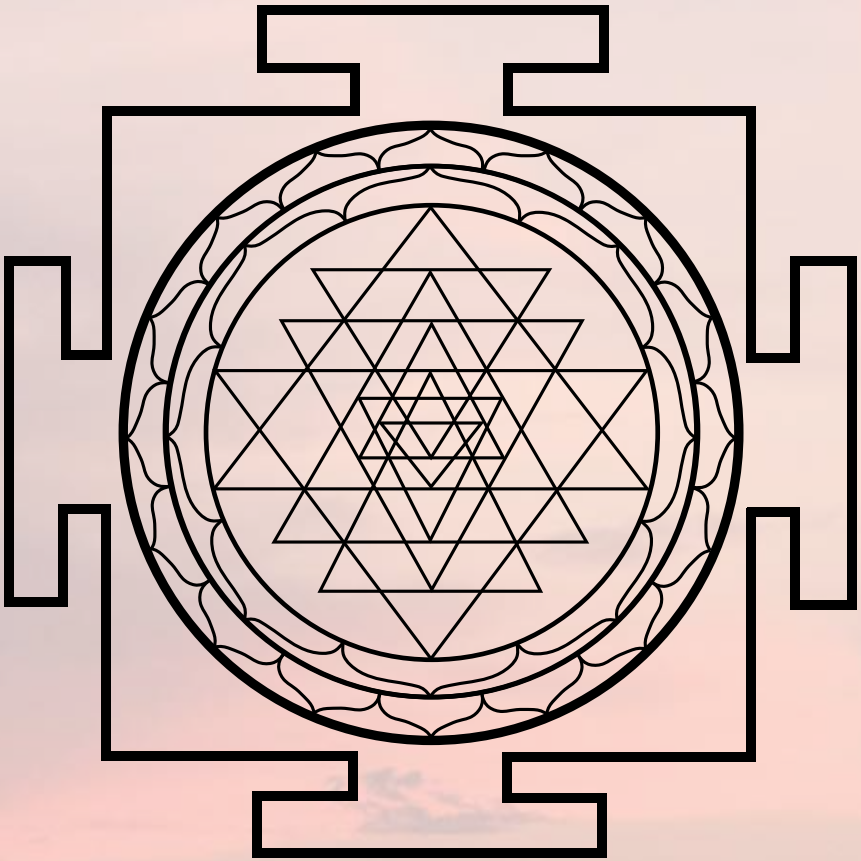

ऐं ह्रीं क्लीं

नमो नारायण,

श्री स्वामी सत्यानन्द जी की तपोभूमि, रिखियापीठ में सीता कल्याणम् के अवसर पर ८ से १२ दिसम्बर, २०१८ तक आयोजित शत्चण्डी महायज्ञ में आपका स्वागत करते हुए मुझे अपार आनन्द का अनुभव हो रहा है। इस पावन अवसर पर आप सपरिवार व बन्धु-बान्धवों सहित पूजा में सम्मिलित होने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

—श्रीकान्त गोयनका

कार्यक्रमः

८ से ११ दिसम्बर	प्रात: ८ बजे से सायं ६ बजे तक	शतचण्डी पूजा
१२ दिसम्बर	प्रात: ८ बजे से सायं ४ बजे तक	शतचण्डी पूर्णाहुति एवं सीता-राम विवाह

नमो नारायण,

श्री स्वामी सत्यानन्द जी के जीवन व शिक्षाओं की स्मृति में रिखियापीठ में योग पूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर १८ से २२ दिसम्बर, २०१८ तक आयोजित महामृत्युंजय यज्ञ में आपका हार्दिक स्वागत है। इस पावन यज्ञ में अपने परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित अपनी श्रद्धा अर्पित करने तथा भगवान शिव एवं गुरुदेव के आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु आप सादर आमंत्रित हैं।

—नटवर रतेरिया

कार्यक्रमः

१८ से २१ दिसम्बर	प्रात: ८ बजे से सायं ६ बजे	मृत्युंजय होम
२२ दिसम्बर	प्रात: ८ बजे से सायं ४ बजे	मृत्युंजय पूर्णाहुति एवं परमहंस सत्यानन्द जी का जन्मदिवस

निमंत्रण

शतचण्डी महायज्ञ और योग पूर्णिमा महोत्सव २०१८

रिखियापीठ में शत्चण्डी महायज्ञ, योग पुर्णिमा व गणेश आराधना के परम पवित्र कार्यक्रमों का आयोजन दिसम्बर २०१८ में पुन: किया जाएगा। सभी के भौतिक एवं आध्यात्मिक कल्याण के लिए संसार में सुख, शान्ति एवं समृद्धि के संकल्प को प्रसारित करने वाली परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी द्वारा स्थापित की गयी इन ऐतिहासिक कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु आप सादर आमंत्रित हैं।

इन आराधनाओं का श्री गणेश ५ दिसम्बर को गुरु-भक्ति योग आराधना से होगा और समापन २२ दिसम्बर मार्गशीर्ष पूर्णिमा के शुभ मुहूर्त में परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी के जन्मोत्सव से होगा।

इस वर्ष ५ और ६ दिसम्बर को आयोजित गुरु-भक्ति योग आराधना बहुत ही शुभ है क्योंकि परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी की महासमाधि के १०८ महीने पूरे होने के साथ-साथ रिखियापीठ में आयोजित गुरु-भक्ति योग आराधनाओं की एक माला सम्पूर्ण होगी।

एक परमहंस और युगद्रष्टा के संकल्प को फलीभूत होते हुए अनुभव करने का अवसर आपको दिसम्बर २०१८ में यहा रिखियापीठ में प्राप्त होगा। इसलिए स्वजनों एवं मित्रों सहित आप आइए और देवी माँ, शिव, गणेश तथा गुरुदेव के आशीर्वाद व अनुग्रह प्राप्त कीजिए, जिसकी अविरल धारा का प्रवाह इन परम पुनीत दैवी शक्तियों के आवाहन और आराधना के दौरान होगी।

५-६ दिसम्बर	गुरु-भक्ति योग आराधना
८-१२ दिसम्बर	शतचण्डी महायज्ञ
१५-१७ दिसम्बर	गणेश आराधना
१८-२२ दिसम्बर	योग पूर्णिमा

योग साधना

क्रिया योग और तत्त्व शुद्धि (अंग्रेजी) १६-२२ दिसम्बर

इस परिचायक क्रिया योग साधना सत्र के दौरान क्रिया योग के प्राचीन अभ्यासों द्वारा साधकों को एक क्रमिक और व्यावहारिक पद्धति से अवगत कराया जाएगा। प्रतिभागियों को तंत्र में वर्णित तत्त्व शुद्धि के अभ्यासों के रहस्य भी उद्घाटित किए जाएँगे।

Please contact Rikhiapeeth for further details and registration:

Email: rikhiapeeth@gmail.com
Tel: 09102699831 (8 -11 am and 2-5 pm)
Address: Rikhiapeeth, PO Rikhia, Dist. Deoghar, Jharkhand, 814113

जय गुरूदेव • जय माता दी • जय भोलेनाथ

एक परमहंस की परम्परा

शतचण्डी महायज्ञ एक अति-प्राचीन तांत्रिक आराधना है जिसे परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी ने लोगों के जीवन में एक सकारात्मक और गुणात्मक परिवर्तन के उद्देश्य से एक वार्षिक उत्सव के रूप में रिखियापीठ में स्थापित किया। आर्त्त मानवता के प्रति करुणा से उद्वेलित परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी ने शतचण्डी महायज्ञ की परम्परा स्थापित की जिस के द्वारा दैवी अनुग्रह का आवाहन न केवल रिखिया के लिए बल्कि समस्त मानवता के लिए किया जाता है। अपने संकल्प शक्ति द्वारा उन्होंने इस परम्परा को स्थायी रूप से स्थापित किया जिससे हर एक के जीवन में सुख, शान्ति और समृद्धि का अनुभव होता है।

किसी भी परम्परा की शक्ति, ऊर्जा और सार उसकी निरंतरता पर आश्रित रहता है। परम्परा का शाब्दिक अर्थ होता है 'जो कल था, आज है और कल रहेगा'। इस वर्ष रिखियापीठ में शतचण्डी महायज्ञ के २४ साल पूरे होंगे। इस बहुआयामी आयोजन से उत्पन्न ऊर्जा और रूपान्तरकारी प्रभाव दिनोदिन बढ़ते जा रहा है। इस यज्ञ परम्परा के सभी आयाम-उपासना, सत्संग तथा दान क्रमश: प्रत्येक वर्ष के आयोजन के साथ समय की मरूभूमि में गहरे चिह्न छोड़ते जा रहे हैं।

शतचण्डी महायज्ञ जैसे परम्पराओं की स्थापना साधारण लोगों के बस की बात नहीं है। सम्पूर्ण इतिहास में परम्पराओं की स्थापना केवल महापुरुषों और महर्षियों द्वारा स्थापित की गयी हैं जो समाज की वर्तमान आवश्यकताओं के साथ-साथ सुदूर भविष्य में मानवता की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मार्ग दर्शन देने की क्षमता रखते थे। परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी ने अपने आध्यात्मिक सम्पत्ति को बाँटने के लिए शतचण्डी महायज्ञ को अपना माध्यम बनाया। एक परमहंस द्वारा स्थापित यह शतचण्डी महायज्ञ मानवता की व्यथाओं के निवारण और साथ ही इस युग और आने वाले युगों के उथल-पुथल में स्थिरता प्रदान करने वाला राम-बाण है।

यह अति-पवित्र और अति-प्राचीन यज्ञ बनारस के विद्वान पंडितों द्वारा सम्पादित की जाती है, जिसमें तंत्र के मूलभूत उपकरण- मंत्र, यंत्र तथा मंडल द्वारा आध्यात्मिक चेतना का विकास होता है। यह यज्ञ प्रत्येक व्यक्ति को अपने नियति और कर्त्तव्य को पूर्ण करने के लिए एक सशक्त साधन प्रदान करता है। स्वामी शिवानन्दजी ने कहा है, "प्रत्येक व्यक्ति के दो मूलभूत कर्त्तव्य हैं जो विश्व में सभी के लिए समान हैं। एक आत्म-रक्षा और दूसरा आत्म-साक्षात्कार।" इस पूरे भूमंडल के सभी लोगों में बाह्य भेद होते हुए भी मूल अस्तित्व में यह दो सर्वसामान्य कर्त्तव्यों द्वारा सभी एक दूसरे से जुड़े हैं। यज्ञ परम्परा द्वारा परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी ने सबको इन कर्त्तव्यों को निभाने के लिए मार्ग दर्शाया।

योग पूर्णिमा का शुभारम्भ २००८ में महामृत्युन्जय होम के रूप में भगवान शिव के अनुग्रह का आवाहन तथा योग की पूर्णता को मनाने के उद्देश्य से हुआ। सभी में परम चेतना अथवा शिव तत्त्व प्रसुप्त अवस्था में विद्यमान है जिसके जागरण से जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति हो सकती है। भगवान शिव आदि-गुरु हैं, सन्तुलन और समत्त्व के प्रतीक हैं। शिव आदि-योगी हैं क्योंकि जीवन में सभी द्वन्द्वों के मध्य रहते हुए भी वे स्थिर और शान्त रहते हैं। योग पूर्णिमा का समापन मार्गशीर्ष पूर्णिमा के पावन अवसर पर होता है जब परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी का जन्मदिवस मनाया जाऐगा क्योंकि उन्हीं के प्रेम, प्रेरणा तथा योग में अभूतपूर्व योगदान ने ही हम सबके जीवन को छुआ और हमारा उत्थान सम्भव हो पाया है।

परमहंस सत्यानन्दजी ने कहा था,"कलौ चण्डी विनायक: - कलियुग में चण्डी और गणेश का आवाहन करना चाहिए। चण्डी द्वारा जीवन में परिवर्तन एवं गणेश द्वारा जीवन में शुभता प्राप्त होती है।" इसी प्रेरणा से पीठाधीश्वरी स्वामी सत्यसंगानन्दजी ने रिखियापीठ के वार्षिक आवाहन और आराधना की परम्परा में गणेश आराधना को शतचण्डी महायज्ञ और योग पूर्णिमा के बीच जोड़ा है। अब इस परम्परा की परिपूर्णता स्पष्ट रूप से झलकती है, क्योंकि इस सम्पूर्ण आराधना में परमपिता परमेश्वर शिव, जगत् जननी देवी माँ और अब उनके पुत्र भगवान गणेश भी शामिल हो गए हैं, जिनका रिखियापीठ में विशेष महत्त्व है क्योंकि स्वामी सत्यानन्दजी ने स्वयं उन्हें यहाँ प्रतिष्ठित किया और २० साल उनकी आराधना की।

गणेश आराधना को परम्परा में शामिल करने की समयोचितता का प्रमाण इस वर्ष स्वामी निरंजनानन्दजी और स्वामी सत्यसंगानन्दजी के अष्टविनायक की यात्रा थी जिसे उन्होंने परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी के महासमाधि के ८ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में किया।

परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी ने जीवन के अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों के लिए अनेक परम्पराएँ छोड़ी हैं ताकि सभी जीवन की चुनौतियों का कुशलता से सामना करते हुए अपने कर्तव्यों को निभा सकें। नि:सन्देह मानवता के लिए उनके दिये हुए सबसे महत्त्वपूर्ण परम्पराओं में से एक है यह यज्ञ परम्परा – शतचण्डी महायज्ञ, योग पूर्णिमा और गणेश आराधना। एक परमहंस द्वारा स्थापित इन परम्पराओं से निश्चित रूप से भारत और पूरे विश्व के लोग लाभान्वित होंगे, केवल आज के लिए नहीं बल्कि आने वाले पीढ़ियों के लिए भी।

दिसम्बर २०१८ में हम सब रिखियापीठ में आपके शुभागमन की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेंगे। जगत् जननी देवी माँ, परमपिता परमेश्वर शिव और उनके सुपुत्र श्री गणेश, जिनकी आराधना यहाँ पर १९९५ से प्रत्येक वर्ष होती आ रही है, उनकी अनुग्रह हमें पुन: प्राप्त होगी। एक परमहंस द्वारा स्थापित एवं प्रतिष्ठित यह परम्परा एक शाश्वत वरदान है जो केवल आपके लिए और हमारे लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए है।

रिखियापीठ, देवघर, झारखण्ड, ८१४११३

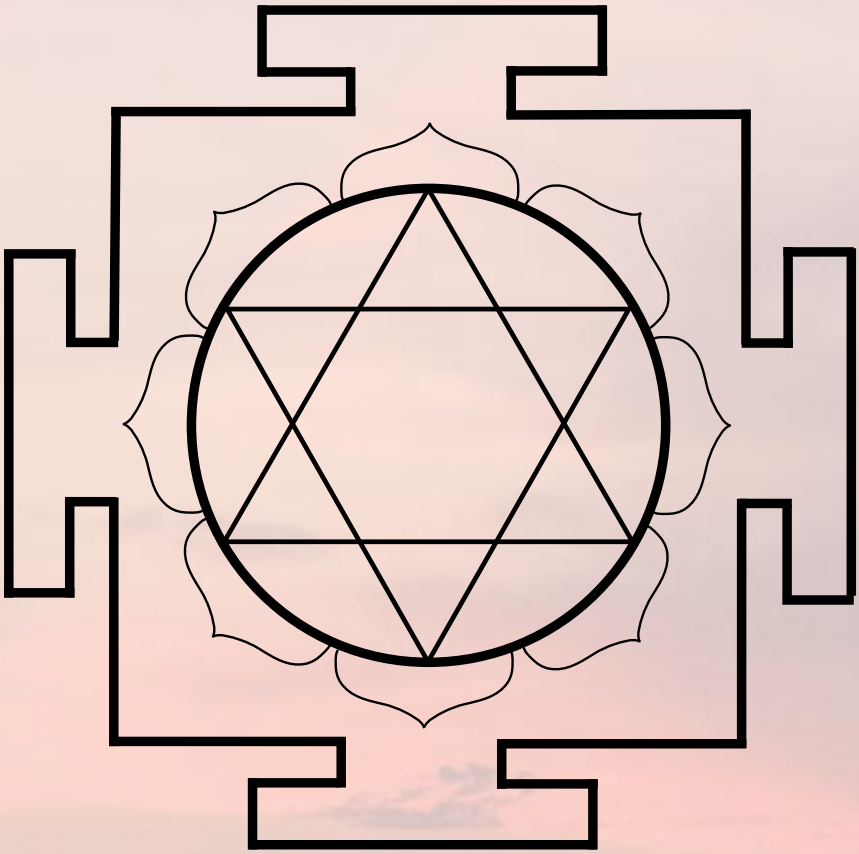

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

रिखियापीठ, देवघर, झारखण्ड